जनपद की पृष्ठभूमि

संभल का क्षेत्रफल 2458 वर्ग किमी है और यह उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में है। जिला पाँच जिलों अर्थात पश्चिम में अमरोहा, उत्तर में मुरादाबाद व रामपुर, पूर्व में बदायूं, दक्षिण में बुलंदशहर से घिरा हुआ है। जनगणना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 21.93 लाख है और जनसंख्या घनत्व 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी के राज्य औसत की तुलना में प्रति वर्ग किमी 892 व्यक्ति का है। जनसंख्या के अन्य पहलुओं में मुख्य रूप से ग्रामीण आबादी, अधिक गरीबी और सेवा क्षेत्र का कम प्रतिशत हैं। जिले के भौगोलिक क्षेत्र का 82% खेती के तहत होने से जिला मुख्य रूप से कृषि प्रधान है। सकल फसल क्षेत्र 3,73,941 हेक्टेयर है जिसमें कुल बुवाई क्षेत्र लगभग 2,01,260 हेक्टेयर है। सकल फसल क्षेत्र का 74% सिंचित है. जिले के 2.52 लाख किसानों हैं। लगभग 91.5% जोतें 1 हेक्टेयर से कम आकार की हैं। जिले में उगाई जाने वाली मुख्य फसलों में गेहूं, बाजरा, धान, उरद, आलू, गन्ना, सरसों, अमरूद और सब्जियां हैं। जिले में डेयरी, डेयरी उत्पाद, औषधीय और सुगंधित पौधों सहित बागवानी, मत्स्य पालन, कृमि खाद, कृषि आधारित और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग आदि के विकास की संभावना है।

जिले में 167 बैंक शाखाओं का नेटवर्क है जिसमें वाणिज्यिक बैंकों की 61, ग्रामीण बैंक की 88, जिला सहकारी बैंक की 08 और उत्तर प्रदेश सहकारी ग्राम विकास बैंक (एलडीबी) की 05 शाखाएं हैं। इनके अलावा एक्सिस बैंक, आईडीबीआई बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और एचडीएफसी बैंक जैसे निजी बैंकों की 05 शाखाएं हैं।

जिला प्रोफाइल

संभल जिला अक्षांस 28.58 और 78.58 देशांतर पर है। जिले के पूर्व में उत्तर प्रदेश का रूहेलखण्ड संभाग है। यह प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 445 किमी दूर है। यह पश्चिमी ऐग्रो क्लाइमेट जोन में है। यहाँ की मिट्टी दोमट, बलुई व विकनी है इसका 200883 हे. फसल क्षेत्र में है तथा निवल बुवाई क्षेत्र का 98.03% सिंचित है। जिले का फसल घनत्व 186% है। सिंचाई का प्रमुख स्रोत भू जल और कुछ हद तक सतही जल है।

जिले की कुल जनसंख्या 21.93 लाख है, जिसमें 11.61 लाख पुरूष और 10.32 लाख महिलाएं हैं। जिले का जनसंख्या घनत्व राज्य के 829 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की तुलना में के 892 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। कुल 360419 लाख परिवारों में से 238602 परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। कुल साक्षरता दर 49.12% है जिसमें पुरुष एवं महिला दर क्रमश: 58.52% एवं 38.51% है। लगभग 65% परिवार गरीबी रेखा से नीचे हैं। 20% से अधिक परिवार पक्के मकानों में रहते हैं। पेयजल की सुविधा शत-प्रतिशत जनसंख्या के लिए उपलब्द्ध है लेकिन बिजली व सेनिटेशन सुविधा केवल क्रमश: 20%, और 10% परिवारों को उपलब्ध है। यह प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और कम हो जाता है जहां बिजली, सेनिटेशन सुविधा केवल 8% परिवारों को उपलब्ध है।

2014-15 की चालू कीमत पर जिले का सकल जिला घरेलू उत्पाद (जीडीडीपी) ₹.65,332 करोड़ है। जीडीडीपी का लगभग 80% प्राथमिक क्षेत्र, मुख्यत: कृषि से प्राप्त होता है। राज्य की कुल जीएसडीपी (₹.9.76 लाख करोड़) में जिले का योगदान 0.07% है।

जिले में सब्जी, मेन्थोल, गुड, खांडसारी, दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों की प्रसंस्करण इकाइयों के विकास की अच्छी संभावनाएं हैं। कुछ लोग हथकरघा और जरी एवं चिकनकारी भी करते हैं।

जिले की प्रमुख फसलें गेंहूँ, धान, उरद, बाजरा, आलू व सरसों हैं। नकदी फसलों में गन्ना व मैंथा प्रमुख फसल हैं। कुछ प्रमुख फसलों की उत्पादकता राज्य के औसत से अधिक है। रबी 2013-14 के दौरान गेहू की उपज 33.85 कुंतल प्रति हेक्टेयर थी जो राज्य के औसत 32.77 कुंतल प्रति हेक्टेयर से अधिक है। खरीफ 2013-14 में धान की उपज 23.04 कुंतल प्रति हेक्टेयर थी जो राज्य के औसत 22.58 कुंतल प्रति हेक्टेयर से कम है। तथापि, छोटे आकार की जोतें, अर्थात 53.73% जोतें 0.50 हेक्टेयर से कम हैं।

जिले में खाद्यान्न हेतु पर्याप्त भंडारण सुविधाएं हैं। बैंकों द्वारा कृषि उत्पाद को गिरवी रख ऋण न देने के कारण, कृषकों को अपना उत्पाद बाज़ार से कम मूल्य पर बिचौलियों को बेचना पड़ता है।

जिले की आर्थिकी में पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है। कृषीतर क्षेत्र की प्रमुख गतिविधियां ज़री, जरदोज़ी व कालीन बुनाई हैं। यह कार्य गुन्नौर, संभल व पवांसा विकास खण्डों में किया जाता है। इसके अतिरिक्त संभल शहर में पशुओं की हड्डी व सींग से कला कृतियां भी बनाई जाती हैं। संगठित विपणन नेटवर्क न होने से कारीगरों को अपना कच्चा माल (सूत /रेशा /कपड़ा) बिचोलियों से खरीदना पड़ता है व तैयार माल भी इन्ही ट्रेडरों को बाजार से कम दाम पर में बेचना पड़ता है जिससे उन्हें बहुत कम मार्जिन मिल पाता है।